कलाकृति

अंक-5 (2022-23)

संरक्षक

श्रीमती रुबी कौशल
सचिव, दि.न.क.आ.

परामर्शदाता

श्री राजीव गौड़, सहायक सचिव (तकनीकी)

संपादक

श्रीमती कल्पना देवानी, हिंदी अनुवादक

सहायक

श्रीमती पारुल ,कनसल्टेंट
श्री हिमांशु, कनसल्टेंट

अनुक्रमणिका

संदेश

सरस्वती वंदना

पत्रिका का विमोचन

आयोग के कार्मिकों के लेख/कविताएं

संपादकीय पता
दिल्ली नगर कला आयोग
कोर 6 ए, यू जी एवं प्रथम तल
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

आंतरिक परिचालन हेतु गृहपत्रिका में व्यक्त विचारों से प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं।

अजित पई

अध्यक्ष, दि.न.क.आ.

संदेश

राजभाषा हिंदी न केवल कार्यालयीन कामकाज की भाषा है बल्कि एक सवैधानिक दायित्व भी है, जिसका अनुपालन करना एवं दिए गए दिशा निर्देशों के अनुसार कार्य करना अति आवश्यक है । हिंदी भाषा की सहजता एवं सुगमता ने जन-सामान्य के बीच अपनी पहचान बनाई है । इसके स्वरुप को न केवल देश-प्रदेश बल्कि विश्व स्तर पर देखा जा सकता है । यह अंक राजभाषा के उत्तरोतर विकास के साथ आयोग में कार्य कर रहे कार्मिकों की रचनाधर्मिता को भी उजागर करेगा ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं ।

(अजित पई)

अध्यक्ष

मनदीप सिंह

सदस्य, दि.न.क.आ.

संदेश

राजभाषा हिंदी सांस्कृतिक विभिन्नता में एकता का प्रतीक है । हिंदी विभिन्न भाषा -भाषियों तथा संस्कृतियों के बीच एक सेतु का कार्य करती है । राजभाषा हिंदी सांस्कृतिक और सामाजिक परंपरा की धनी है और विचारों व भावों की अभिव्यक्ति में पूर्ण सक्षम भी है । यह भारत के जन-जन के मन में बसी भाषा है । अत: हमारा संवैधानिक दायित्व और नैतिक कर्तव्य भी है कि हिंदी को अपने अधिकाधिक विभागीय कार्यों की भाषा बनाए । मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होगी ।

पत्रिका के सम्पादक मण्डल, रचनाकारों प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों-कर्मचारियों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई व मेरी शुभकामनाएं ।

(मनदीप सिंह)

सदस्य

आशुतोष कुमार अग्रवाल
सदस्य, दि.न.क.आ.

संदेश

देश की आर्थिक,सामाजिक,सास्कृतिक एवं भावनात्मक एकता को मज़बूत करने में हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं का उल्लेखनीय योगदान रहा है । पत्रिका एक ओर जहां कार्यालय के कार्यकलापों का दर्पण होती है, वहीं माध्यम से इसका प्रस्तुतिकरण राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग को बढ़ाने में भी सहायक होता है । मैं सभी रचनाकारों को बधाई देते हुए आग्रह करता हूं कि वे पूर्व की भांति राजभाषा का अनवरत प्रवाह बनाए रखें ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएं ।

आशुतोष

(आशुतोष कुमार अग्रवाल)
सदस्य

निवेदिता पांडे

सदस्य, दि.न.क.आ.

संदेश

भाषा सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं को जानने का अत्यंत सशक्त एवं प्रभावी माध्यम होती है, राजभाषा हिंदी सांस्कृतिक विभिन्नता में एकता का प्रतीक है । हिंदी विभिन्न भाषा-भाषियों तथा संस्कृतियों के बीच एक सेतु का कार्य करती है ।

राजभाषा हिंदी सास्कृतिक और सामाजिक परम्परा की धनी है और विचारों व भावों की अभिव्यक्ति में पूर्ण सक्षम भी है । यह भारत के जन-जन के मन में बसी भाषा है । अत: हमारा सवैधानिक दायित्व और नैतिक कर्तव्य भी है कि हम हिंदी को अपने अधिकाधिक विभागीय कार्यों की भाषा बनाएं । मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होगी ।

पत्रिका के रचनाकारों तथा प्रकाशन से जुडे सभी अधिकरियों-कर्मचारियों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं ।

निवेदिता पांडे

(निवेदिता पांडे)

सदस्य

कामरान रिज़्वी, अपर सचिव (डी)
आवासन तथा शहरी कार्य मंत्रालय
सदस्य, दि.न.क.आ.

संदेश

हिंदी सम्पूर्ण देश के नागरिकों को एक सूत्र में पिरोये रखती है, सभी भारतीय भाषाओं को माला में हिन्दी मध्यमणि का काम करती है, हिंदी हमारी राजभाषा है तथा हिंदी में काम करने में हमें अपने आप को गौरवांवित महसूस करना चाहिए ।

अपनी भाषा को प्रतिष्ठित करने के लिए हमें राजभाषा हिंदी में कामकाज करना चाहिये, डिजिटल विश्व में भी हिंदी ने अपनी जड़े जमाई हुई हैं, अब कम्प्यूटर पर यूनीकोड की सहायता से आसानी से हमारा सम्प्रेषण हिंदी भाषा में विश्व में कहीं भी प्रेषित कर सकते हैं, हिंदी सवैधानिक रुप से भारत की राजभाषा और हमारे देश में सबसे अधिक बोली एवं समझी जाने वाली भाषा है इसलिए हमें हिंदी में काम करने में हिचक न रखते हुए हिंदी का प्रयोग प्रत्येक स्तर पर करना चाहिये

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े समस्त कार्मिकों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

कामरान

(कामरान रिज़्वी)
सदस्य

रुबी कौशल

सचिव, दि.न.क.आ.

सचिव की कलम से

भाषा सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं को जानने का अत्यंत सशक्त एवं प्रभावी माध्यम होती है, कोई भी राष्ट्र या समाज अपनी भाषा के बिना अपनी सामाजिक एवं साहित्यिक धरोहर को संरक्षित नहीं रख सकता, भाषा सभ्यता तथा संस्कृति की संवाहक होती है ।

बहुभाषी देश भारत में हिंदी ऐसी भाषा है जो कि संवेदनाओं को सहजता से अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य रखती है, हिंदी ने अपनी सरलता से भारतीय संस्कृति और साहित्य को जीवंत बनाए रखा है, हिंदी सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोकर अनेकता में एकता की भावना को निरंतर जागृत रखती है, हिंदी पूर्णत: वैज्ञानिक भाषा है तथा इसको अपनी मानक शब्दावली, व्याकरण और शैली है, इसका शब्दकोश अत्यंत व्यापक तथा समृद्धदशाली है, जिसका निरंतर विकास हो रहा है ।

सभी कर्मिकों से अपील है कि राजभाषा नीति से संबंधित प्रावधानों का कार्यांवयन सुनिश्चित करने की ज़िम्मेदारी का निर्वहन करें, हम सभी अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने के अपने सवैधानिक और नैतिक दायित्व को निभाने का संकल्प लें ।

कलाकृति पत्रिका में अपनी लेखनी की प्रतिभा के माध्यम से जो रचनाएं प्रकाशित कर रहे हैं, मैं उसके लिए शुभकामनाएं देती हूं ।

(रुबी कौशल)
सचिव

राजीव कुमार गौड़
सहायक सचिव (तकनीकी), दि.न.क.आ.

संदेश

हिंदी को भारत माता के माथे की बिंदी भी कहा जाता है, सम्पूर्ण भारतवर्ष में आप कहीं भी जाएं हिंदी के माध्यम से संवाद तथा व्यवहार आसानी से किया जा सकता है, हिंदी भाषा का साहित्य भी बहुत बडीं मात्रा में सर्वत्र उपलब्ध है, हिंदी भाषा की स्वीकार्यता सम्पूर्ण भारत में स्पष्ट प्रतीत होती है । अब हिंदी आम जनता की बोलचाल की भाषा बन गई है । अंतराष्ट्रीय कंपनियां भी भारत में अपने उत्पादों के प्रचार में हिंदी का ही प्रयोग करती हैं क्योंकि उन्हे पता है आम जनता तक पहुंचना है तो हिंदी भाषा से अधिक सशक्त माध्यम अन्य कोई नहीं है ।

पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं ।

(राजीव कुमार गौड़)
सहायक सचिव (तकनीकी)

कल्पना देवानी, हिंदी अनुवादक

सम्पादकीय

विभागीय पत्रिकाओं का उद्देश्य सरकारी कामकाज में हिंदी को प्रोत्साहित करने के अतिरिक्त विभागीय प्रतिभाओं को लेखन का मंच प्रदान करने के साथ-साथ अन्य गतिविधियों की जानकारी प्रदान करना भी होता है । कलाकृति अपने इस उद्देश्य में पूर्णत: सफल रही है ।

किसी कार्यालय में कार्मिकों के विचारों को मूर्तरुप देने में उस कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों का बहुत योगदान होता है । भाषा का मुख्य उद्देश्य सम्प्रेषण है । कलाकृति में समाहित लेख, रचनाएं एवं पाठ्य सामग्री पाठकों के लिए प्रेरणादायक तथा ज्ञानवर्धक सिद्ध होगें । इसके माध्यम से हिंदी के प्रति रुचि रखने वालों के लिए मार्ग प्रशस्त होगा । हिंदी भाषा की सहजता एवं सुगमता ने लोगों के बीच अपनी पहचान बनाई है । राजभाषा हिंदी न केवल कार्यालयीन कामकाज की भाषा है बल्कि इसका सवैंधानिक दायित्व भी है, जिसका अनुपालन करना एवं विनिर्दिष्ट दिशा-निर्देशों के अनुसार कार्य करना अति आवश्यक है । आयोग में प्रशासन तथा तकनीकी स्तर पर हिंदी में यथा सम्भव हिंदी में कार्य किया जा रहा है । हर्ष का विषय है कि अब आयोग की अर्धवार्षिक पत्रिका जारी की जाएगी ।

कलाकृति परिवार से जुड़े सभी सदस्यों को पत्रिका के प्रकाशन की बधाई देती हूं । आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत है ।

कल्पना देवानी,हिंदी अनुवादक

सरस्वती वंदना

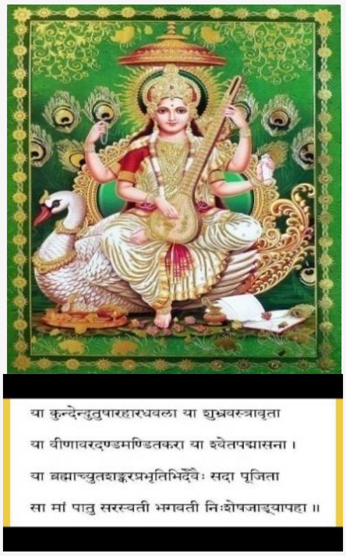

हे शारदे मां, हे शारदे मां,
अज्ञानता से हमें तार दे मां ।
तू स्वर की देवी ये संगीत तुझसे
हर स्वर तेरा हर गीत तेरा
हम हैं अकेले हम हैं अधूरे
तेरी शरण हम, हमें प्यार दे मां ।
हे शारदे मां, हे शारदे मां,
अज्ञानता से हमें तार दे मां।

मुनियों ने समझी गुनियों ने जानी
वेदों की भाषा वेदों की वाणी ।
हम भी तो समझें, हम भी तो जानें
विद्या का हमको अधिकार दे मां ।
हे शारदे मां, हे शारदे मां,
अज्ञानता से हमें तार दे मां ।

तू श्वेतवर्णी कमल पर विराजे,
हाथों में वीणा मुकुट सिर पर साजे
मन से हमारे मिटा के अंधेरे
हमको उजालों का संसार दे मां ।
हे शारदे मां, हे शारदे मां,
अज्ञानता से हमें तार दे मां ।

"हिंदी" को बढ़ावा देने को भारत ने यू.एन. को दिये छह करोड़ रुपये

न्यूयार्क, ए.एन.आइ : भारत संयुक्त राष्ट्र (यू.एन.) में हिंदी को बढ़ाया देने का प्रयास कर रहा है ।

भारत के उप स्थायी प्रतिलिपि श्री आर. रवींद्र ने दुनिया भर में हिंदी भाषी आबादी के बारे में जानकारी मुहैया कराने के लिए संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक संचार विभाग (डी. जी. सी.) के साथ, वर्ष 2018 से साझेदारी कर अतिरिक्त बजट मुहैया करा रहा है । इस साझेदारी के बाद से संयुक्त राष्ट्र की वेबसाईट, सोशल मीडिया हैंडल और फेज़बुक हिंदी पेज के माध्यम से हिंदी में समाचार प्रसारित किया जाता है ।

इसके अलावा संयुक्त राष्ट्र रेडियो चैनल हर सप्ताह हिंदी में न्यूज़ बुलेटिन प्रसरित करता है ।

गृह शांति का अचूक मंत्र

लघुकथा

यों तो मीठालाल का परिवार कस्बे में अपनी अच्छाइयों के कारण जाना जाता था । स्वयं मीठा लाल धर्मप्राण थे पुराने विचारों पर चलने वाला इंसान था, पर अचानक पिछले कुछ वर्षों से परिवार में अशांति रहने लगी । पिता-पुत्र, पति -पत्नी के बीच कलह रहने लगा । समझदारी के सब कुछ प्रयत्न करने पर भी कलह थमने का नाम नहीं ले रहा था, इस कारण यह कुछ अधिक परेशान रहने लगा ।

एक दिन अपने मित्र की सलाह पर अमल करते हुए वह पास के शहर के 'समस्या निराकरण केंद्र' गया । उसकी कल्पनाओं में केंद्र कोई देवास्थान और उसका संचालनकर्ता कोई सयाना होगा, पर यहां पहुचने पर तो कुछ अलग ही पाया । बहुत ही सुंदर वा बड़ा भवन एक तरफ पूछताछ केंद्र से जानकारी लेकर रजिस्ट्रेशन रसीद कटाई और अपने क्रम की प्रतीक्षा में वहीं उपस्थित भीड़ में बैठ गया । करीब दो घंटे बाद नाम बुलाने पर उसे एक हाल में जाने को कहा, वहां पहले से ही एक सूट-बूट धारी महाशय बैठे हुए थे, उन्होने मुस्कराकर सामने कुरसी पर बैठने को कहा । मीठालाल की भौचक्की आंखे दाएं-बाएं देख रही थी । तब ही मीठालाल ने सुना कि बोलिए, आपकी क्या समस्या है ?

यह सुनकर मीठालाल ने अपनी सारी समस्या बता दी । मीठालाल की बातें सुनकर वह सज्जन बोले, देखिये आपकी समस्या का हल हो सकता है पर आपको पच्चीस-तीस हज़ार रुपये खर्च करने पडेगे । मै आपको 'गृह शांति' का एक अचूक मंत्र बताता हूं । यह सुनकर मीठालाल को झटका सा लगा पर कुछ संभलकर बोला "वो कैसे और क्या समस्या का हल हो जाएगा?" तो वे बोले, बिल्कुल हो जाएगा केवल आपको अपनी पत्नी व बेटे को एड्राइंड मोबाइल दिलाने होंगे, फिर देखना घर से अशांति रफू चक्कर हो जाएगी ।

मीठालाल ने वहां से निकलते ही मोबाइल खरीदे और पत्नी तथा बेटे को दिये । अब घर में कलह नहीं रहता, अब सब अपने -अपने मोबाइल में लगे रहते हैं । यह सचमुच की शांति है या शांति का भ्रम, यह तो वक्त बताएगा ।

(सौजन्य से: साहित्य अमृत)

घर की ऊर्जा

भोगीलाल बहुत बडे व्यापारी थे । कारोबार अच्छा-खासा चल रहा था । आलीशान मकान था । एक बहुत बड़ी बैठक और पांच शयन कक्ष ।

परिवार में अस्सी वर्ष की वृद्ध मां, पत्नी, दो जवान बेटे और एक बेटी ।

मां गेरैज में पड़ी खटिया पर लेटी अपनी ज़िदगी के बाकी दिन गिन रही थी ।

समय के बीतते कारोबार में मुनाफा कम होता गया । पत्नी की बीमारी के पीछे बहुत पैसा खर्च होने लगा । बीमारी पकडी नही जा रही थी ।

जवान बेटी की शादी की बात बन नहीं पा रही थी । कभी-कभी बाप-बेटे के बीच छोटे-मोटे झगडे हो जाते थे ।

भोगीलाल ने अपनी व्यथा मिश्र चमनलाल को सुनाई । चमनलाल ने सलाह दी कि किसी अच्छे वास्तुशास्त्री को बताओ । शायद घर में कोई वास्तुदोष हो । चमनलाल की सलाह मानकर उसने एक बहुत बडे वास्तुशास्त्री को बुलाया । वास्तुशास्त्री ने पूरे घर के भीतर -बाहर चक्कर लगाया और बताया कि वैसे तो आपके मकान का प्लॉन वास्तु के अनुसार ही है । आपके मकान में सिर्फ एक ही दोष है । भोगीलाल ने पूछा “पंडितजी, बताइये कि इस दोष का निवारण कैसे किया जाए ?”

वास्तुशास्त्री ने कहा “ आपके घर में ऊर्जा की कमी है । “

भोगीलाल ने पूछा “ ऊर्जा लाने के लिए क्या किया जाए ?”

वास्तु शास्त्री ने कहा “ ईश्वर सभी जगह नहीं पहुंच पाते । इसलिए उसने बनाई है मां । मां ईश्वर का साक्षात रुप है । आपने पत्थर की मूर्ति को पूजा स्थान में स्थापित किया है, किंतु साक्षात रुप ईश्वर को गेरैज में स्थान दिया है । मां घर की ऊर्जा होती है । आपके घर की ऊर्जा घर के बाहर रखी है । मां घर का उजाला है, मां के बिना आपके घर में रोशनी कैसे होगी । आपको घर के प्लॉन बदलने या किसी विधि-विधान की अवश्यकता नहीं । बस घर की ऊर्जा को घर के भीतर स्थान दे दो । उनके आशीर्वाद से सारी आपदाएं अपने आप हल हो जाएगी ।वास्तुशास्त्री को सुनकर भोगीलाल अवाक रह गया ।

(सौजन्य से: साहित्य अमृत)

यू हीं नहीं मिल जाते हैं

आज सोचा तो लगा ऐसे, जीवन में हम किसी से
यूं ही नहीं मिल जाते
अवश्य ही पूर्व जन्म का लेखा जोखा शेष रहा होगा,
जो वर्तमान में निभा जाने को मिलना लिखा होगा,
रुढिवादी सोच नहीं हकीकत सी लगती है,
वरना इस धरा पर, इतने वर्षों तक इन्ही राहों पर
इस निश्चित स्थान पर आते-जाते
हम यूं ही नहीं मिल जाते
कर्म क्षेत्र पहले एक बना, फिर रक्त का ना सही
मन का रिश्ता जुड़ सा जाना, बचपन की सखियां
छूट गयीं यौवन के साथी छोड़ आये, इस ढलती उम्र की
सखी हो तुम, आसानी से ना छुटोगी, अपने अंतर्मन कि बात कहूं
हम यूं ही नही मिल जाते
अब छोड़ के तुम तो चल दी हो, मिलती रहना यह
आशा है, मान भी लो कोई अनकहा सा रिश्ता है और साथ
हमारा इतना था, वर्ना हम यूं ही नहीं मिल जाते ......

कल्पना देवानी, हिंदी अनुवादक

हिन्दी

अंग्रेजी की ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में भी मिल जायेंगे ये हिंदी शब्द

आत्मनिर्भर (Atmanirbhar)	फंडा (Funda)
आधार (Aadhaar)	चमचा (Chamcha)
जुगाड़ (Jugaad)	नाटक (Natak)
डब्बा (Dabba)	चुप (Chup)
हड़ताल (Hartal)	छी-छी (Chhi Chhi)
शादी (Shaadi)	एकदम (Ekdum)
अब्बा (Abba)	चक्का जाम (Chakkajam)
अन्ना (Anna)	झुग्गी (Jhuggi)
गुलाब जामुन (Gulab jamun)	यार (Yaar)
दादागिरी (Dadagiri)	टाइमपास (Timepass)
सूर्य नमस्कार (Surya namaskar)	मिर्च मसाला (Mirch masala)

आपकी नजर में भी है तो साझा करें जानकारी

मेरे खिड़की से नज़ारा

मेरे खिड़की से दुनिया की झलक दिखती है
मनुष्य के उन्नति की एक छवि मिलती है
पहले लोगों को पैदल चलते देखा
घोड़ा गाड़ी रिक्शा सवारियों को ढोते देखा
प्रदूषित हवा का तब न था अहसास
नीला आकाश तब नज़र आता था खिड़की के पास
वकत बदला, और वाहनों की तादाद बढ़ी
अब सड़कों पे लोग कम, वाहनों की लगी कड़ी
भूल गए लोग पैदल चलना
सेहत बिगड़ी ,ह्रदय रोग, मधुमेह, मोटापे से हुआ सामना
प्रदूषित हवा मे सांस लेना हुआ दुश्वार
यह तकनिकी उपलब्धिओं का कैसा था प्रहार
मेरे खिड़की से दुनिया की झलक दिखती है
मनुष्य के उन्नति की एक छवि मिलती है
खिड़की से भांति भांति के प्रदर्शन नज़र आए
सत्ता मिल जाने पर प्रदर्शन
सत्ता को गिराने के उम्मीदवारों का प्रदर्शन
घोटाले के आरोप पे सत्ता से बहिष्कार करे जाने पर प्रदर्शन
और एक दूसरे को अपशब्द कहने वालों का प्रदर्शन
महिलाओं का प्रदर्शन, पुरुषों का प्रदर्शन, बीच वालों का प्रदर्शन
बच्चों का प्रदर्शन, बुज़ुर्गों का प्रदर्शन
ना देखा कोई प्रदर्शन अनाथ असहाय बच्चो के लिए
रेगिस्तान की तपती गर्मी में पानी तलाशती औरतों के लिए
आंसू बहाते न देखा अज्ञात गांव में तेज़ नदी पर यातायात के साधन जुटाने के लिए

मेरे खिड़की से दुनिया की झलक दिखती है
मनुष्य की उन्नति की एक छवि मिलती है
आजकल खिड़की से धर्म के ठेकेदार नज़र आते हैं
धर्म के नाम पे नफरत फैलातें हैं
नासमझ लोगों को विध्वंस के पथ पर ले जातें हैं
एक दूसरे से बैर का पाठ पढ़ाते हैं
सच्चा धार्मिक कभी एक दुसरे से बैर नहीं सिखाता
वो तो केवल मिल जुल के रहने का ज्ञान बांटता
मेरे खिड़की से दुनिया का झलक दिखती है
मनुष्य की उन्नति की एक छवि मिलती है
अब तो चाह बची है खिड़की से एक दिन फिर नीला आकाश नज़र आएगा
खुली हवा में फिर सांस ले पायेगा
मनुष्य फिर एक दिन बैर भूल मिलजुल के रह पाएगा
विज्ञानं का प्रयोग फिर सही दिशा में हो पाएगा
दृष्टि बंद होने से पहले यह सपना है
की मनुष्य प्रगति का सही अर्थ समझ पाएगा
मेरे खिड़की से दुनिया की झलक दिखती है
मनुष्य के उन्नति की एक छवि मिलती है

अमित मुखर्जी
कंसलटेंट

श्री राजबीर सिंह, हिंदी टंकक, 30 जून, 2022 को सेवा निवृत

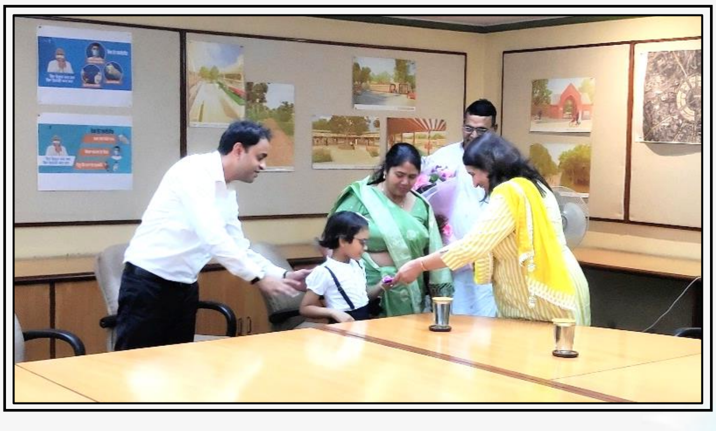

आयोग की पत्रिका का विमोचन

अधिकारिक भाषा के उपयोग को प्रोत्साहित करने और कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा को व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करने की दृष्टि से, दिल्ली नगर कला आयोग ने 'कलाकृति' शीर्षक से माह जुलाई 2022 को पत्रिका का विमोचन किया। इस अवधि का अंक-4 (2021-22) आयोग द्वारा जारी किया गया। इस वर्ष से अर्धवार्षिक पत्रिका जारी की जाएगी। पत्रिका में आयोग की विभिन्न गतिविधियों, समय-समय पर आयोजित बैठकों, कार्यशालाओं और राजभाषा माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं का संकलन है। तकनीकी लेख भी समाहित हैं जोकि आयोग के तकनीकी प्रस्तावों पर आधारित हैं। राजभाषा सम्बंधी ज्ञानवर्धक सूचनाएं भी समाहित की गई हैं।

श्रीमती रेनू बस्सी, सहायक, 29 जुलाई, 2022 को सेवा निवृत

माननीय मंत्री महोदय की अध्यक्षता में आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की आयोजित बैठक दि. 26 अगस्त, 2022 को ऊटी (तमिलनाडु) में आयोजित की गई ।

माननीय मंत्री महोदय की अध्यक्षता में दि. 26.08.2022 को आयोजित मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की ऊटी में आयोजित बैठक का अनुभव

मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की ऊटी में आयोजित बैठक की तैयारी एक माह पूर्व ही आरम्भ हो गई, जब बैठक में ले जाने के लिए रिपोर्टें, कागज़ पत्र और दस्तावेज़ की फोटोप्रतियों का फोल्डर तैयार कर दिया गया। सचिव महोदया और हिंदी अनुवादक अर्थात मैंने विस्तारा एयर लाईंस से बुकिंग करवा ली। दिल्ली से कोयम्बटोर के लिए और कोयम्बटोर से दिल्ली, समय रहते बुकिंग करवाने के कारण सही रेट में टिकट मिल गयी।

25.08 2022 को इंदिरा गांधी एयर पोर्ट, टी-3 पर ही आवासन तथा शहरी कार्य मंत्रालय के निदेशक, उपनिदेशक और अन्य गण मान्य अतिथिगणों के दर्शन हो गए। दिल्ली से 3 घंटे की फ्लाईट के पश्चात कोयम्बटोर पहुंच कर टेक्सी पकड़ी जोकि ऊटी के होटल तक थी। रास्ता रमणीय दृश्य, घुमावदार सड़कें, हल्की बरसात, हरियाली, पहाड़, घाटियां और 15 यू टर्न कट से गुज़रते हुए हम लगभग 3 घंटे पश्चात शाम को होटल पहुचें।

पहाड़ी क्षेत्रों में रात जल्दी हो जाती है। होटल में रात्रि भोजन 8.00 बजे खा भी लिया। अगली सुबह 9.00 बजे हिंदी सलाहकार समिति की बैठक होने के कारण हमें जल्दी सोना था। किंतु स्थान परिवर्तन होने के कारण ढंग से नीद नहीं आई, सुबह भी जल्दी उठ गए और नहा धो कर तैयार हो गए। ड्राईवर को हमने रोक लिया था ताकि बैठक स्थल होटल जेम पार्क तक जाने में तथा ऊटी भ्रमण करने में कठिनाई ना हो।

बैठक समय पर आरम्भ हो गई। निदेशक रा.भा. ने मंत्री जी तथा सभी कार्यालयों से पधारे निदेशक, सचिव तथा राजभाषा प्रतिनिधियों का स्वागत किया। मंत्री जी ने सभी कार्यालयों के प्रधान तथा राजभाषा प्रतिनिधियों का नामश: अभिनंदन किया। स्क्रीन पर सभी कार्यालयों द्वारा भेजी गई तिमाही रिपोर्ट आधारित आंकडे दर्शाए गए और कार्यालय-वार, वार्षिक कार्यक्रम की मदवार चर्चा की गई। बैठक के पश्चात मध्यान्ह भोजन के लिए एकत्रित होना था, इससे पूर्व सभी कार्यालय प्रतिनिधियों का सामूहिक फोटो लिया गया। ऊटी में भ्रमण के लिए बॉटनीकल गार्डन में नौका विहार किया जोकि आन्नद दायक रहा, हेंण्ड मेड चाकलेट और चाय की फेक्ट्री देखी, घर के लिए चाकलेट आदि खरीदी वहां चाय पीने से स्फूर्ति आ गई। वापस आने के लिए फ्लाईट कोयम्बटोर से लेनी थी, कोयम्बटोर में ईशा फॉउंडेशन में भव्य शिव मूर्ति देखने के लिए हम सुबह जल्दी निकल पडे सड़क के एक तरफ सदगुरु जी का ध्यान सैंटर था और दूसरी ओर

शिव की भव्य मूर्ति । ध्यान सैंटर देखने के बाद बैल गाड़ी में बैठ कर हम शिव मूर्ति की ओर बढ़े । मन तो बहुत था थोड़ा और रुक कर वहां समय बिताते किंतु फ्लाईट थी इसलिये वापस एयर पोर्ट की ओर चल पडे । बहुत से खट्टे-मीठे अनुभव लेकर मनोरम दृश्य मोबाइल के कैमरे में कैद करके वापस दिल्ली पहुंचे ।

कल्पना देवानी,हिंदी अनुवादक

हिंदी दिवस समारोह-2022 एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एक रिपोर्ट

कोविड -19 के लम्बे अंतराल के बाद 14-15 सितम्बर 2022 को हिंदी दिवस समारोह 2022 एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन सूरत में आयोजित किये जाने के निमत्रण पत्र और उसके साथ गृह मंत्रालय, शहरी आवासन और कार्य मंत्रालय के अनिवार्य रुप से बैठक में भाग लेने के पत्र प्राप्त हुआ । सभी कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सूरत की बुकिंग करवा ली । ऑनलाईन पंजीकरण करवाया मंत्रालयों तथा नराकास के सभी कार्मिकों की महनत रंग लायी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय इंडोर स्टेडियम, सूरत (गुजरात) में 14-15 सितम्बर 2022 को लगभग 12000 दर्शक गणों से खचा -खच भरे इस स्टेडियम में बडे-बडे गणमान्य नेताओं, वक्ताओं श्रोताओं और दर्शकों की तालियों की गूंज, हिंदी की वंदना के साथ यह समारोह आरम्भ हुआ । कई कार्यालयों को श्री अमित शाह, गृह मंत्री के कर कमलों द्वारा राजभाषा कीर्ति पुरस्कार शील्ड प्रदान की गई । कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण किया गया तथा सूरत के राज्य मंत्री ने भी अखिल भारतीय स्तर पर उपस्थित सभी राजभाषा प्रतिनिधियों का स्वागत किया । देश भर के कोने कोने से उपस्थित राजभाषा अधिकारियों /कर्मचारियों का जोश देखने जैसा था प्रथम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन बनारस काशी में किया गया था तब यह दृष्य देखने को नहीं मिला था जो कि इस बार महा संगम भव्य दृष्य दृष्टिगोचर हो रहा था । जहां एक ओर मीडिया की मुस्तैदी भी देखते ही बनती थी, वहीं दूसरी ओर हमारे जवान सभागणों को सही स्थान पर बिठाने सुरक्षा जांच करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे थे । सभी सुरक्षाकर्मी और प्रबंधकर्ता प्रशंसा के पात्र हैं ।

मध्यान्ह भोजन का प्रबंधन भारतीय रेलवे ने किया था, जिसमें रेलवे 12000 आमत्रित हिंदी भाषा सेवा कार्मिकों को पैक किया हुआ भोजन छाछ के साथ प्रावधान किया । लंच के पश्चात विगत 75 वर्षों में राजभाषा हिंदी की विकास-यात्रा, युवाओं को गर्व की अनुभूति कराती हिंदी विषय के अंतर्गत श्री प्रसून जोशी, श्री पंकज त्रिपाठी, श्री निशांत जैन आदि सी.जी.एफ.सी. मुबई, अभिनेता आई.ए.एस. अगले दिन भारतीय सिनेमा और हिंदी विषय में श्री महेश मंजरेकर जी का सत्र प्रशसनीय रहा ।

स्वच्छ भारत पुरस्कार विजेता सूरत हकीकत में स्वच्छ्ता में प्रथम है, यहां का सुवाली बीच, खमस बीच, श्याम मंदिर, साइंस सैंटर देखने योग्य हैं । कुछ कार्मिक जो ट्रेन से एक दिन पहले पहुंच गये थे । उन्होने स्टेचू ऑफ यूनिटी देखने का अवसर भी प्राप्त कर लिया ।

राजभाषा परिवार

छोटी सी दुनिया, देखी थी अब तक
अपने परिवार को अपना माना था
अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में जाकर इस वर्ष
हुआ राजभाषा परिवार दृष्टिगोचर
विहंगम दृष्य नैनो ने देखा. खुली आंखों ने देखा सपना ।।

सितम्बर माह में प्रतियोगिताएं करवाकर ,
राजभाषा पुरस्कार वितरण करवाकर बिता रहे थे
कार्यकाल अपना, इस वर्ष मनाया हिंदी दिवस सूरत में ,
अखिल भारतीय सम्मेलन में देखा इतना बड़ा
राजभाषा परिवार ,अब तक रहे इस महा संगम से वंचित ।।

सब नदियों का महासागर देखा ,राजभाषा परिवार स्नेह
का किया अवलोकन ,लघु से गुरु तक ,मंत्री से संत्री तक चरनो से शीर्ष तक....
हिंदी भाव , हिंदी प्रभाव हिंदी ही राष्ट्र का सद्भाव
हम भारतवासी के मन मे,हिंदी का, कर लिया चुनाव ।।

हिंदी तन , हिंदी मन ,हिंदी का लहरा परचम
हो हिंदी देश में,हिंदी विदेश मे,हिंदी मे ही लिखे संदेश
हिंदी ज्ञान , हिंदी विज्ञान ,हिंदी ही संज्ञा, सर्वनाम
हिंदी ध्यान, हिंदी संज्ञान ,हिंदी ही करतल का रूझान
मन में हिंदी का वास हो,हिंदी विश्वास हो
भरा सबमें उल्लास हो,हिंदी ही सबसे खास हो ।।

कल्पना देवानी ,हिंदी अनुवादक

दिल्ली नगर कला आयोग की राजभाषा कार्यांवयन समिति

1.	श्रीमती रुबी कौशल	सचिव, दि.न.क.आ., अध्यक्ष, रा.का.स.
2.	श्री राजीव कुमार गौड़	सहायक सचिव (तकनीकी), दि.न.क.आ., सदस्य सचिव, रा.का.स.
3.	श्रीमती अलका धीर	निजी सचिव, दि.न.क.आ., सदस्य, रा.का.स.
4.	श्रीमती कल्पना देवानी	हिन्दी अनुवादक, दि.न.क.आ., सदस्य, रा.का.स.

हिंदी प्रोत्साहन माह, पुरस्कार वितरण समारोह

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति जागरुकता तथा उसके उत्तरोतर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से आयोग में सितम्बर माह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । सरकार की राजभाषा निति को सफल बनाने हेतु और हिंदी प्रोत्साहन माह के दौरान राजभाषा हिंदी के अनुकूल वातावरण सृजित कर विभिन्न हिंदी विषयक कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । पुरस्कृत कार्मिकों को राशि पी.एफ.एम.एस. द्वारा खातों में भिजवा दी गई । साथ ही प्रमाणपत्र भी दिये गए ।

हिन्दी प्रोत्साहन माह 2022 के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किये जाने के अंतर्गत कार्यालय में निम्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं,

1. हिन्दी में टिप्पण तथा पत्र प्रारूप लिखना
2. हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता
3. हिदी टंकण प्रतियोगिता
4. मंच प्रतियोगिता व समापन समारोह

दिनांक 30.9.2022 को आवासन तथा शहरी कार्य मंत्रालय से सहायक निदेशक, राजभाषा श्रीमती संजीला यादव ने आयोग के हिन्दी प्रोत्साहन माह, समापन समारोह पर सभी कार्मिकों को पुरस्कार वितरित किये तथा राजभाषा सम्बंधी नियमों तथा उनका प्रयोग के विषय में मार्गदर्शन किया जोकि उत्साहवर्धक तथा ज्ञानवर्धक रहा ।

दिल्ली नगर कला आयोग
राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह
भारत पर्यावास केन्द्र,

दिल्ली नगर कला आयोग
राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह

दिल्ली नगर कला आयोग
राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह

दिल्ली नगर कला आयोग
राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह

दिल्ली नगर कला आयोग
राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह

दिल्ली नगर कला आयोग
राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह

दिल्ली नगर कला आयोग
राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह

आयोग के कार्मिकों द्वारा लिखे गए
निबंध और कविताएं

दोस्ती

हर सुख दुःख में, साथ साथ जीया करते थे।
हार हो या जीत एक दुसरे का हमेशा साथ दिया करते थे।
कभी हम तुमसे कभी तुम हमसे रूठ जाया करते थे।
फिर हम तुम्हे और कभी तुम हमें मना लिया करते थे।
एक दूसरे की खुद से ज्यादा परवाह किया करते थे।
ये बात बस कल की ही लगती है।

हम तुम अपनी दोस्ती पर कितना इतराया करते थे।

यकीन नहीं होता समय के साथ हालात इतने बदल जायेंगे।
हम अपनी अपनी दुनिया में इस कदर खो जायेंगे।
एक दूसरे की जिंदगी में बस एक याद बनकर रह जायेंगे।
हम ना तुमसे, ना जिंदगी से कोई शिकायत करेंगे।
बस इस यकीन को हमेशा दिल में कायम रखेंगे।
जब भी दिल से पुकारेंगे, तुम्हें अपने पास पाएंगे।

अल्का धीर, निजी सचिव

इंसान और परिंदा

मैनें अपने गीत में एक कल्पना की है कि इंसान काश परिन्दे सा होता क्योंकि परिंदे कभी आपस में नफरतें, होड, ईष्या, लालच, ये तेरा ये मेरा जैसी सोच नहीं रखते । उनके अन्दर कोई भेदभाव नहीं होते । वो सब बेफिक्र रात को सो जाते हैं कि सुबह का इंतजाम मालिक करेगा ।

अजगर करे ना चाकरी, पंक्षी करे ना काम
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम ।

इन्हीं भावों को पिरोए मेरा यह गीत हाजिर है:-

इंसान काश परिंदे सा होता
मनमर्जी उडाने भरता कोई भी बंधन ना होता
कोई भेदभाव कभी दिल ना दुखाता
झूठ, फरेब, लालच हमें ना लुभाता
ये तेरा, ये मेरा कहता ना कोई
कहीं कोई अपना देता ना धोखा
इंसान काश परिंदे सा होता ।
मंदिर, मस्जिद, गिरजा या गुरूद्वारा
सारा आसमां फिर होता हमारा
हक से कहीं भी हम बैठ जाते
कोई कहीं पर तमाशा ना होता
इंसान काश परिंदे सा होता ।
अपने ही ना फिर बनते दुश्मन
नहीं टूटते अच्छाईयों के कुछ भरम
मुश्किल हालात नहीं घेर पाते
अपना कोई खफा भी ना होता
इंसान काश परिंदे सा होता ।

सिद्धार्थ सागर
वास्तुक सहायक

आत्म-निर्भर भारत

भारतीय संस्कृति प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है । '**आत्म- निर्भर' का शाब्दिक अर्थ है - स्वयं पर आश्रित** । प्राचीन काल से भारत आत्म- निर्भर रहा है । इतिहास गवाह है कि स्वाधीनता आंदोलन के समय स्वराज एवं स्वदेशी का भारतियों ने पुरज़ोर समर्थन किया है।

कोरोना महामारी के समय जब विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्था चरमरा गईं, तब माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने कोरोना राहत पैकेज के साथ "आत्म- निर्भर भारत" का विकल्प रखा जिसमे 20 लाख करोड़ के पैकेज की घोषणा 12 मई, 2020 में की । साथ ही हमारे भारतीय वेदों में से कहा - **एष: पंथा** अर्थात यही एकमात्र रास्ता है विपत्ति से लड़ने का । उन्होने भारतवासियों को चुनौतियों के समय को अवसर मे बदलने का संदेश दिया । तत्पश्चात दिनांक 01 फरवरी, 2021 को वित्त मंत्री निर्मला सीता रमण ने वित्तीय बजट के दौरान "आत्म- निर्भर भारत" मिशन के लिए 27 लाख करोड़ रुपये पैकेज की घोषणा की जोकि भारतीय जी॰डी॰पी॰ का लगभग 13% है ।

यह मिशन तीन चरणों में लागू किया गया है - 1.0, 2.0 और 3.0 इसके अंतर्गत आने वाली कुछ योजनाएँ इस प्रकार हैं - वन नेशन एंड वन राशन कार्ड, वोकल फॉर लोकल, एमरजेंसी वर्किंग कैपिटल फंडिंग इत्यादि । यह भारत के प्रत्येक वर्ग को लाभ देगा ।

"भारत को फिर से विश्व गुरु बनाना है ,
स्वदेशी को अपनाना है ।"

आत्मा - निर्भरता के अनेक लाभ हैं । मनुष्य सबसे छोटी एकाई है । जब एक मानव आत्म-निर्भर बनेगा तभी उसका परिवार, उसका गाँव, शहर और अंत: देश आत्म-निर्भर बन पाएगा । एक राष्ट्र के आत्म-निर्भर होने से उस देश का धन उसी देश के विकास में प्रयोग होगा । अर्थव्यवस्था सुचारु रहेगी, आयात की जगह निर्यात बढ़ेगा तो विदेशी मुद्रा बढ़ेगी । संकट एवं किसी भी प्रकार की महामारी के समय किसी भी अन्य राष्ट्र पर आश्रित नहीं रहना पड़ेगा । रोज़गार के नए अवसर प्राप्त होंगे । 'मेक इन इंडिया फॉर इंडिया एंड वर्ल्ड' अर्थात भारत में भारत एवं विश्व के लिए बनाना - यह भी आत्म-निर्भर भारत मिशन का एक हिस्सा है।

आत्म-निर्भर भारत के पाँच स्तम्भ इस प्रकार हैं - अर्थव्यवस्था, अवसंरचना, प्रौधोगिकी, गतिशील, जनसांख्यिकी तथा मांग एवं पूर्ति ।

“उगते हुए सूरज का सुनहरा पैगाम है,
आने वाला कल भारत के नाम है।“

आत्म-निर्भर भारत मिशन से किसान, मत्स्य पालक, दिहाड़ी मजदूर तथा विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोग लाभार्थी हुए हैं। जब राष्ट्र आत्म-निर्भर होगा तो उसको अपनी छोटी-छोटी चीजों के लिए दूसरे देशों पर आश्रित नही होना पड़ेगा अन्यथा बाकी राष्ट्र उन पूर्तियों के लिए मोटी धन राशि एवं विभिन्न प्रकार की शर्तें रखते हैं । प्रगतिशील राष्ट्र के लिए यह एक आवश्यक है की वह ‘आत्म-निर्भर’ बने तभी उन राष्ट्र का एवं उसके नागरिकों का विकास होगा । इसके लिए लघु, मध्यम एवं कुटीर उधयोगों का भी विशेष योगधान है। पहले पी॰पी॰ई॰ किट एवं मास्क जैसी वस्तुओं का बहुत कम ही उत्सर्जन होता था लेकिन अब लघभग शून्य से लेकर 2 लाख प्रतिदिन की संख्या से इन्न चीजों का निर्माण होने लगा है । इसी प्रकार न केवल चिकित्सा क्षेत्र बल्कि विभिन्न क्षेत्र जैसे कि कृषि, मत्स्य-पालक, लघु-उधयोग, कपड़ा व्यवसाय आदि ने काफी सुधार किए हैं । लेकिन यह अंत नहीं है । प्रत्येक दिन एक नया अवसर प्रदान करता है । जो क्षेत्र अभी अछूते हैं उन पर भी महारत हासिल करनी होगी, इसके लिए युवाओं को कार्यभार संभालना होगा । अपने नए विचारों एवं गुणों, तकनीकी का प्रयोग करके नयी उपलभधियों तक राष्ट्र को पाहुचना होगा। अंतः

“भारत के लिए यह एक अंत नहीं , नयी शुरुआत है ।
जब निकाल पड़े हैं आत्म - निर्भरता कि राह पर,
तो पीछे हटने की न कोई बात है ये तो बस शुरुआत है ।“

नेहा चौहान
वास्तुक सहायक

****

आत्म-निर्भर भारत

किसी व्यक्ति विशेष, गांव, शहर या देश का दूसरों पर निर्भर ना रहना ही आत्म-निर्भर कहलाता है । साधारण शब्दों में समझा जाए तो यदि आप अपने खाने-पीने एवं अन्य जरूरतों को पूरा करने के लिए दूसरों पर या अपने पडोसी पर निर्भर हैं तो वह कभी भी आपको खाना देने या अन्य जरूरतों को पूरा करने से मना कर सकता है । इसके ठीक विपरीत यदि आप अपने कार्यों को खुद करने में सक्षम हैं या अपने लिए खुद खाना बना सकते हैं तो आप आत्मनिर्भर की श्रेणी में आते हैं।

भारत देश को निर्भर ना रहना पडे इसके लिए गांधी जी ने भी कई प्रयास

किए । स्वदेशी आन्दोलन में गांधी जी ने देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए देश में बनी हुई वस्तुओं इत्यादि को प्रयोग में लाने पर पूरा जोर दिया था ।

इसी राह में भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए जनता को संबोधित करते हुए 12 मई 2020 को आत्मनिर्भर भारत अभियान की घोषणा की थी । श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 'लोकल फॉर वोकल' नारे के साथ आत्मनिर्भर भारत अभियान की घोषणा की थी । आत्मनिर्भर भारत से तात्पर्य यह है कि भारत देश अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए किसी दूसरे देशों पर निर्भर ना रहे ।

आत्मनिर्भर भारत के प्रमुख पांच स्तंभ निम्न प्रकार हैं:-

1. **अर्थव्यवस्था**: भारत की अर्थव्यवस्था मिश्रित प्रकार की है । भारत की अर्‌थव्यवस्था में परिवर्तन जरूरी है और अर्थव्यवस्था को सुधारने हेतु आत्मनिर्भरता जरूरी है क्योंकि यदि हम दूसरे देशों की वस्तुएं प्रयोग में

लाते हैं तो हमारा विदेशी मुद्रा भण्डार कम होता है और दूसरे देशों को फायदा पहुँचता है ।

2. **आयात घटेगा निर्यात बढेगा:** यदि भारत आत्मनिर्भर बन जाता है, आत्मनिर्भर से तात्पर्य छोटे-छोटे व्यवसाय, उघोग, एम.एस.एम.ई. को बढावा मिलता है, तो भारत देश विदेशी वस्तुओं पर निर्भर नहीं रहेगा जिससे आयात कम होगा और भारत निर्यात कर सकेगा जिससे भारत में विदेशी मुद्रा भण्डार में बढोतरी होगी और भारत देश विकाशशील से विकसित देश बन जाएगा ।

3. **तकनीकी एवं इन्फ्रास्ट्रक्चर:** भारत देश तकनीकी में बहुत आगे है । तकनीकी एवं इन्फ्रास्ट्रक्चर में उननति करने पर आत्मनिर्भरता को पूर्ण रूप से पाया जा सकता है । भारत एक कृषि प्रधान देश है जिसकी 70 फीसदी से अधिक जनसंख्या कृषि पर आधारित है । तकनीकी का उपयोग कृषि क्षेत्र को और सुगम बनाने के लिए किया जाता रहा है । यदि कृषि क्षेत्र और तकनीकी एवं इन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूत बनाया जाए तो देश आत्मनिर्भर बन जाएगा ।

4. **रोजगार:** भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा दिनांक 12 मई 2020 को इस योजना हेतु 20 लाख करोड राशि का ऐलान किया गया था जिससे लघु-**उद्योग**, व्यवसाय इत्यादि को बढावा देना था । यदि छोटे-छोटे **उद्योगो**, व्यवसायों की शुरूआत होती है तो अपने देश के लोगों को रोजगार मिलेगा, गरीबी दूर होगी और देश विकसित होगा ।

5. **वस्तुओं का निर्माण:** जैसा कि कोरोना काल में देखा गया कि शुरूआत में हम लोग सेनिटाइजर, मास्क, बुखार मापने वाली मशीन एवं वेक्सीन इत्यादि के लिए दूसरों पर निर्भर थे । परन्तु तुरन्त ही अपने भारत देश में सभी प्रोडक्ट्स जैसे कि सेनिटाइजर, मास्क, बुखार मापने वाली मशीन इत्यादि बनने लगे और इससे देश के सभी युवाओं को रोजगार भी मिला । वेक्सीन की डोज भी स्वदेशी बनी जिससे देश को बिना किसी दूसरे देश पर निर्भर

होकर अपने देशवासियों को वेक्सीन की डोज उपलब्ध कराई गई । यह आत्मनिर्भरता का बहुत महत्वपूर्ण उदाहरण है ।

भारत युवाओं का देश है । भारत में सबसे ज्यादा जनसंख्या 18 वर्ष से 35 वर्ष के युवाओं की है । यदि आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत हम स्वदेशी चीजों को अपनाते हैं तो भारत के युवाओं को रोजगार मिलेगा । रोजगार मिलेगा तो गरीबी दूर होगी और गरीबी दूर होगी तो देश विकासशील नहीं विकसित देशों में गिना जाएगा ।

देश हित ही अपना हित होता है । देश है तो अपनी पहचान है । हमारे देश की प्राचीन संस्कृति हमें आत्मनिर्भर रहना ही सिखाती है । इसलिए देश के प्रत्येक व्यक्ति को यह प्रण करना चाहिए कि हम स्वदेशी वस्तुओं का ही उपयोग करेंगे । स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग से देश का पैसा बाहरी देशों में नहीं जाएगा और देश की अर्थव्यवस्था बहुत मजबूत हो जाएगी ।

गांधी जी के सपनो को साकार करने हेतु एवं नरेन्द्र मोदी जी द्वारा चलाए गए आत्मनिर्भर भारत अभियान से मुख्यत: निम्नलिखित फायदे होंगे:-

1. आयात घटेगा, निर्यात बढेगा ।
2. रोजगार मिलेगा ।
3. अर्थव्यवस्था मजबूत होगी ।
4. गरीबी दूर होगी ।
5. स्वदेशी वस्तुओं के निर्माण से दूसरे देशों पर निर्भरता कम होगी ।
6. देश मजबूत बनेगा ।
7. विदेशी मुद्रा भण्डार बढेगा ।
8. विदेशी कम्पनियों की मनमानी नहीं चलेगी - यदि हम विदेशी वस्तुओं पर निर्भर रहते हैं तो विदेशी कम्पनियों की शर्तों को मानना पडता है । इसलिए भी आत्मनिर्भरता बहुत जरूरी है ।

दीपक चन्द्र बन्दूणी
अवर श्रेणी लिपिक

आत्म-निर्भर भारत

भारत प्राचीन काल से ही आत्मनिर्भर है प्राचीन काल की मूर्तियाँ मकबरे सारी जरूरी सामान को हमारा भारत बनाता था मिट्टी के बर्तनों में खाना बनता था हर एक चीजें खुद बनाई जाती थी । महात्मा गांधी जी ने यह अपना सपना पूरा करने की बहुत कौशिश की परन्तु उनका सपना पूरा न हो सका । उनकी बनी अनेक चीजें गॉव में आज भी प्रचलित हैं ।

करोना काल में हमारे भारत की हालत अच्छी नहीं रही हर एक धर, हर आदमी डूबता जा रहा था क्योंकि एक तो महामारी, दूसरा काम न मिलना नौकरयाँ न मिलना तभी हमारी यंग नौजवानों ने आत्मनिर्भर होकर उस समय को संम्भला अपना धर और परिवार सब का ध्यान रखा नौजवानों ने नौकरियॉ छोड़कर अपना-अपना काम शुरू किया जिससे वह आत्मनिर्भर बनकर बढ़ते चले गये । नौजवानों ने सड़कों पर खड़े होकर दुकानें लगाई वह आज भी उसी दुकान से कमाई करके आजतक सबका ध्यान रखते हैं ।

भारत में पहले बसों में बहुत भीड़ होती थी जिससे की लोगों को आवाजाही की दिक्कतें आती थी भारत ने फ्लाइओवरों और मैट्रों जैसी कई सुविधायें दी ।

चीन से किसी भी सामान का आयात खत्म कर हमें अपने आप को आत्म निर्भर करने का प्रोत्साहन दिया । भारत में सब जगह पार्क में जिम खुले और सड़कों को साफ और बैठने के लिये बैंचों का प्रावधान किया गया ।

भारत में आज हर बच्चा आत्मनिर्भर बनना चाहता है चाहे वह मिडिया से हो या कोई अन्य कार्य कर रहा हो आज किसानों के बच्चे भी खेती की और अग्रसर होने लगे हैं । कई बच्चों ने नौकरी छोड़ अपने गॉव में खेती कर अपना सपना सच किया है ।

चाहे कोई भी व्यक्ति किसी तरह का काम करता है वह हमारे देश को आगे लेकर जा रहा है । भारत में खुदाई के दौरान कई कीमती चीजें निकलती हैं जोकि हमारे भारत की बनाई हुई चीजें हैं । हमारे प्रधानमंत्री जी ने भारत को साफ-सुथरा रखने के लिये भारत की जनसंख्या से अपील की थी तभी से भारत के लोगों में कुछ सफाई को लेकर काम किया जाता है ।

आज हमारे बनाये खिलोने बच्चों को बहुत पसंद आते हैं । हमारा बना हुआ कपड़ा दूसरे देशों में जाता है । हमारी मार्किट सब सूती कपड़ों से भरी होती है ।

भारत से अगर फ्लाइओवर या कुछ अन्य कार्य से पेड़ों को काटा गया तो उसकी जगह और पेड़ लगाने का आग्रह किया गया ।

हमारा भारत महान

सुनीता रानी,उच्च श्रेणी लिपिक

हिंदी भाषा

अपनी भाषा अपनी बोली,
को ही प्रथम प्रणाम करें ।

    एक निशान हो एक प्रधान हो
    एक हो सविधान अपना ।

बिना राष्ट्रभाषा के लेकिन
रहे अधूरा ये सपना ।

    हिंदी पूरे देश को जोड़ने
    वाली एक कड़ी है जो ।

सब भाषाएं छोटी बहनें
हिंदी सबसे बड़ी है जो ।

    बोलचाल, व्यवसाय और
    व्यवहार इसी के नाम करें ।

हिंदी में बोले बतियाएं
हिंदी में ही काम करें ।

दयाराम, एम.टी.एस.

क्या आप जानते हैं

किसी भी देश की आज़ादी और संप्रभुता का प्रतीक होता हैं। भारत के भारतीय राष्ट्रीय को संविधान सभा ने 22 जुलाई, 1947 को अपनाया था। राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे में समान अनुपात में तीन क्षैतिज पट्टियां हैं : गहरा केसरिया रंग सबसे ऊपर, सफेद बीच में और हरा रंग सबसे नीचे है। सफेद पट्टी के बीच में नीले रंग का चक्र है। आइये राष्ट्रीय ध्वज के बारे में प्रश्न और उत्तर के माध्यम से अध्ययन करते हैं।

1. यह कथन किसका है; "एक ध्वज/ झंडा न सिर्फ हमारी स्वतंत्रता बल्कि सभी लोगों की स्वतंत्रता का प्रतीक है।"

(क) जवाहर लाल नेहरु
(ख) महात्मा गाँधी
(ग) सरदार वल्लभ भाई पटेल
(घ) डॉ भीम राव आंबेडकर

उत्तर: (क)
व्याख्या: जवाहर लाल नेहरु

2. भारत के वर्तमान राष्ट्रीय ध्वज का डिज़ाइन किसने तैयार किया था?

(क) सचिन्द्र प्रसाद बोस
(ख) सुकुमार मित्रा
(ग) पिंगली वेंकय्या
(घ) सरोजिनी नायडू

उत्तर: (ग)
व्याख्या: पिंगली वेंकय्या

3. भारत के तिरंगे झंडे में चरखे की जगह “चक्र” कब अस्तित्व में आया था?

(क) 1932
(ख) 1935
(ग) 1942
(घ) 1947

उत्तर: (घ)
व्याख्या: 1947

4. भारत के तिरंगे झंडे के बारे में कौन सा कथन सही नही है?

(क) ध्वज की लंबाई और चौड़ाई का अनुपात 2:3 है
(ख) सफेद पट्टी के मध्य में एक 'चक्र' है जो की प्रगति और गतिशीलता का प्रतीक है
(ग) झंडे के बीच का चक्र अशोक चक्र से लिया गया है
(घ) इस "चक्र" का व्यास, ध्वज की सफेद पट्टी की चौड़ाई के तीन-चौथाई के लगभग है

उत्तर: (क)
व्याख्या: ध्वज की लंबाई और चौड़ाई का अनुपात 3:2 है

5. निम्न में से कौन सा कार्य करना अपराध की श्रेणी में आता है?

(क) झंडे को घुटनों से नीचे कपड़ों के रूप में पहनना
(ख) प्लास्टिक का झंडा फहराना
(ग) राष्ट्रीय ध्वज का प्रयोग व्यापार, व्यवसाय या पेशे के लिए किया जाना
(घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर: (घ)
व्याख्या: उपर्युक्त सभी

6. राष्ट्रीय झंडा फहराते समय सबसे ऊपर कौन सा रंग रहता है?

(क) हरा
(ख) सफ़ेद
(ग) केसरिया
(घ) लाल

उत्तर: (ग)
व्याख्या: केसरिया

7. झंडे में इस्तेमाल किया जाने वाला सफ़ेद रंग किस बात का प्रतीक है?

(क) बलिदान
(ख) सच्चाई और विचारों की पवित्रता
(ग) जीवन की समृद्धि
(घ) निम्न में से कोई नही

उत्तर: (ख)
व्याख्या: सच्चाई और विचारों की पवित्रता

8. राष्ट्रीय झंडा कहाँ पर फहराया जा सकता है?

(क) राष्ट्रपति भवन
(ख) संसद भवन
(ग) आम लोगों के घरों पर भी
(घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर: (घ)
व्याख्या: 26 जनवरी 2002, से फ्लैग कोड बदल गया है. अब भारतीयों को कहीं भी किसी भी समय गर्व के साथ झंडा फहराने की आजादी दे दी गयी है

9. सुप्रीम कोर्ट ने किस अनुच्छेद के तहत ध्वज फहराने के अधिकार को मौलिक अधिकार के रूप में घोषित किया था?

(क) अनुच्छेद 19 (i)
(ख) अनुच्छेद 14
(ग) अनुच्छेद 18
(घ) अनुच्छेद 21

उत्तर: (क)
व्याख्या: सुप्रीम कोर्ट ने 2002 में संविधान के अनुच्छेद 19 (i) (ए) के तहत ध्वज फहराने के अधिकार को मौलिक अधिकार के रूप में घोषित किया था

10. देश में किस कानून के तहत तिरंगे को फहराने के नियम निर्धारित किए गए हैं?

(क) फ्लैग कोड ऑफ इंडिया
(ख) भारतीय ध्वज संहिता
(ग) सिर्फ (क) सही है
(घ) (क) और (ख) दोनों सही हैं

उत्तर: (घ)

छुपे रुस्तम कलाकार

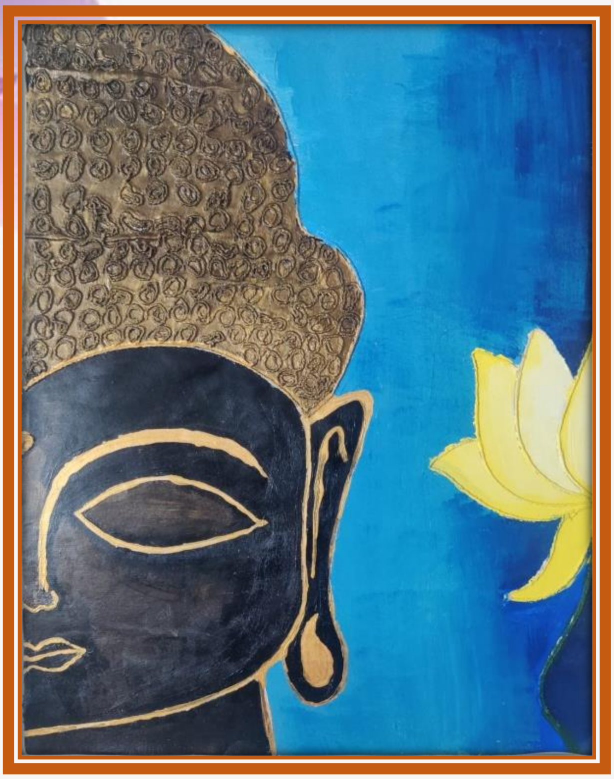

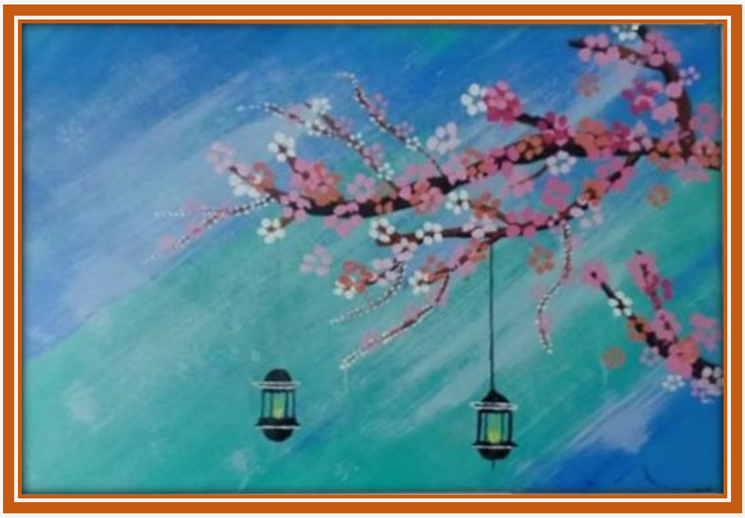

ओजस कौशल, पुत्र श्रीमती रुबी कौशल, सचिव

तनुष गौड़, पुत्र श्री राजीव गौड़, सहायक सचिव (तकनीकी)

पारुल कपूर, कनसल्टेंट

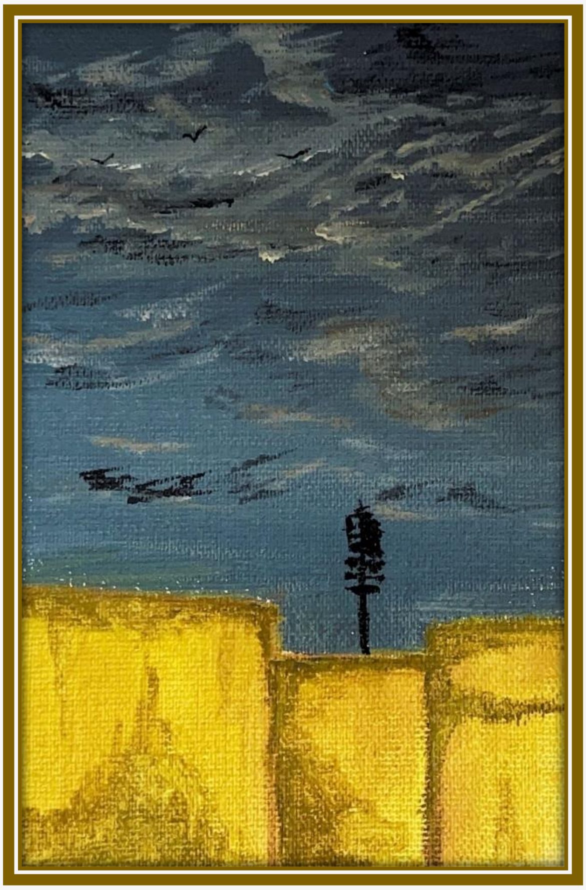

वंशिका रावत, पुत्री श्रीमती इंदु रावत, वरिष्ठ आशुलिपिक

सुरभि देवानी, पुत्री श्रीमती कल्पना देवानी, हिंदी अनुवादक

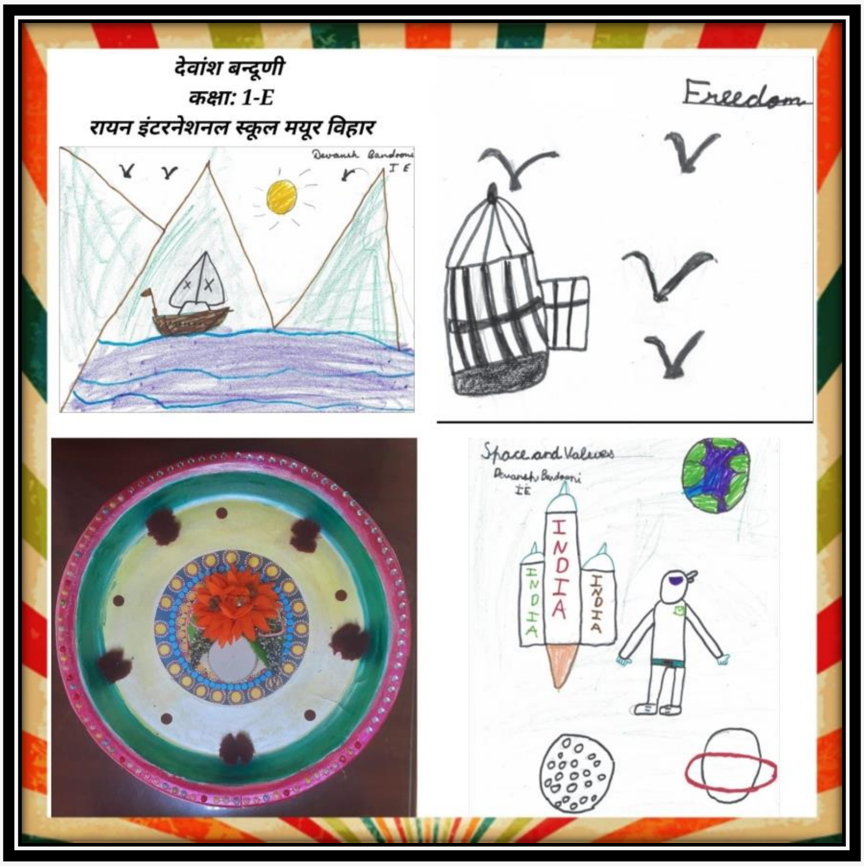

देवांश बंदूनी, पुत्र श्री दीपक चंद्र बंदूनी, अवर श्रेणी लिपिक

हिन्दी से जुड़ी 15 दिलचस्प बातें

1. हिंदी मंदारिन, स्पैनिश, इंग्लिश के बाद विश्व की चौथी सबसे ज्यादा बोले जाने वाली भाषा है।
2. ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी की 'वर्ल्ड इंग्लिश एडिटर' डेनिका सालाजार के अनुसार अब तक हिंदी भाषा के 900 शब्दों को डिक्शनरी में जगह मिल चुकी है। दुनिया की सबसे प्रसिद्ध ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी (शब्दकोश) हर साल भारतीय शब्दों को जगह दे रही है। इनमें हिंदी के शब्दों की बहुलता है। ऑक्सफोर्ड ने 2019 के मार्च संस्करण में हिंदी का शब्द 'चड्डी' इंग्लिश शब्दों की लिस्ट में शामिल किया है। इसी तरह बापू, सूर्य नमस्कार और अच्छा शब्द भी इस प्रतिष्ठित शब्दकोश में जगह बना चुके हैं। साल 2017 में ऑक्सफोर्ड ने करीब 70 भारतीय शब्दों को शामिल किया था, जिनमें 33 से ज्यादा हिंदी थे। इससे पहले 2017 में नारी शक्ति और 2018 में आधार शब्द को 'हिंदी शब्द ऑफ द ईयर' के खिताब से नवाजा गया था। 'अरे यार!', भेलपूरी, चूड़ीदार, ढाबा, बदमाश, चुप, फंडा, चाचा, चौधरी, चमचा, दादागीरी, जुगाड़, पायजामा, कीमा, पापड़, करी, चटनी, अवतार, चीता, गुरु, जिमखाना, मंत्र, महाराजा, मुग़ल, निर्वाण, पंडित, ठग, बरामदा जैसे शब्द पहले से शामिल थे।
3. हिंदी विश्व के तीस से अधिक देशों में पढ़ी-पढ़ाई जाती है, लगभग 100 विश्वविद्यालयों में उसके लिए अध्यापन केंद्र खुले हुए हैं। अमेरिका में लगभग एक सौ पचास से ज्यादा शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा है।
4. इजरायल के रोंडन नामक व्यक्ति ने दुनियाभर की भाषाओं के सही उच्चारण के लिए एक ऑनलाइन मंच 'फोरवो' तैयार किया। इसके मुताबिक उच्चारण को सुनकर अपनी गलतियों को ठीक किया जा सकता है। 2008 में शुरू हुई इस वेबसाइट में भारतीय शब्दों की धूम है। अब तक 14,741 हिंदी शब्दों को इसमें शामिल किया जा चुका है। इनमें स्त्री, ओम, किरण और रायता जैसे शब्द हैं।

5. दक्षिण प्रशांत महासागर क्षेत्र में फिजी नाम का एक द्वीप देश है जहां हिंदी को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिया गया है। भारत, फिजी के अलावा मॉरीशस, फिलीपींस, नेपाल, गुयाना, सुरिनाम, त्रिनिदाद, तिब्बत और पाकिस्तान में कुछ परिवर्तनों के साथ ही सही लेकिन हिंदी बोली और समझी जाती है।
6. 1977 में पहली बार तत्कालीन विदेश मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने हिंदी में संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को संबोधित किया था।
7. हिंदी में उच्चतर शोध के लिए भारत सरकार ने 1963 में केंद्रीय हिंदी संस्थान की स्थापना की। देश भर में इसके आठ केंद्र हैं।
8. इंटरनेट पर हिन्दी के प्रसार तेजी से हो रहा है। 2016 में डिजिटल माध्यम में हिन्दी समाचार पढ़ने वालों की संख्या 5.5 करोड़ थी, जो 2021 में बढ़कर 14.4 करोड़ होने का अनुमान है।
9. इंटरनेट के प्रसार से किसी को अगर सबसे ज्यादा फायदा हुआ है तो वह हिन्दी है। 1997 में हुए एक सर्वेक्षण में पाया गया था कि भारत में 66 फीसदी लोग हिंदी बोलते हैं, जबकि 77 प्रतिशत इसे समझ लेते हैं। डिजिटल माध्यम में 2016 मेंं हिंदी समाचार पढ़ने वालों की संख्या 5.5 करोड़ थी, जो 2021 में बढ़कर 14.4 करोड़ होने का अनुमान है।
10. 1918 में आयोजित हिंदी साहित्य सम्मेलन में महात्मा गांधी ने हिंदी को आम जनमानस की भाषा बताते हुए इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा देने के लिए कहा था। आजादी मिलने के दो साल बाद 14 सितबंर 1949 को संविधान सभा में एक मत से हिंदी को राजभाषा घोषित किया गया था। इस निर्णय के बाद हिंदी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर 1953 से पूरे भारत में 14 सितंबर को हर साल हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। 14 सितंबर 1953 को पहली बार देश में हिंदी दिवस मनाया गया। हिंदी को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देने के लिए 1975 से 'विश्र्व हिंदी सम्मेलन' का आयोजन शुरू किया गया।

11. 1805 में लल्लूलाल द्वारा लिखी गई पुस्तक प्रेम सागर को हिंदी की पहली किताब माना जाता है। इसका प्रकाशन फोर्ट विलियम कोलकाता ने किया था।

12. सन 1900 में सरस्वती में प्रकाशित किशोरीलाल गोस्वामी की कहानी इंदुमती को पहली हिंदी कहानी माना जाता है।

13. 1913 में दादा साहेब फाल्के ने 'राजा हरिश्चंद्र' का निर्माण किया, जिसे पहर्ली हिंदी फीचर फिल्म कहा जाता है।

14. सन 1796 में पहली बार कोलकाता में टाइप आधारित पहली हिंदी की पुस्तक का प्रकाशन हुआ। यही हिंदी व्याकरण की पुस्तक थी। 1826 में हिंदी के पहले समाचार पत्र (साप्ताहिक) उदंत मार्तंड का प्रकाशन कोलकाता से शुरू हुआ।

15. पहली बोलती हुई हिंदी फिल्म आलम आरा का प्रदर्शन 14 मार्च 1931 को हुआ। इस फिल्म के निर्देशक अर्देशिर ईरानी थे।